चिकनगुनियाः कारण, लक्षण एवं बचाव

अर्चना रानी[1] एवं जे0 पी0 गुप्ता[2]
[1]प्रोफेसर, शरीर रचना विभाग, किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय, लखनऊ–26003, उ0प्र0, भारत
[2]डेन्टल सर्जन, पी0एम0एच0एस0, उ0प्र0, भारत
archana71gupta@yahoo.co.in , drjpguptadental@yahoo.com

प्राप्त तिथि–30.06.2017, स्वीकृत तिथि–21.09.2017

सार– चिकनगुनिया दुनिया भर में पाया जाने वाला वायरल रोग है, जो मच्छरों द्वारा काटने से होता है। वर्तमान समय में भारत में इसका आतंक महामारी की तरह फैल रहा है। आमतौर पर यह जानलेवा नहीं होता लेकिन इसके कारण होने वाला जोड़ों में दर्द महीनों तक परेशान कर सकता है। बुखार, जोड़ों व माँसपेशियों में दर्द, थकान, वमन, सर दर्द, त्वचा पर छोटे लाल धब्बे इसके लक्षण है। साफ–सफाई रखकर व मच्छर के काटने से बचाव कर इसे रोका जा सकता है।

बीज शब्द– चिकनगुनिया, मच्छर, वायरस, बुखार, दर्द।

Chikungunya: causes, symptoms and prevention

Archana Rani[1] and J.P. Gupta[2]
[1]Professor, Department of Anatomy
King George's Medical University, Luckow-226003 U.P., India
[2]Dental Surgeon, Provincial Medical Health Services, U.P., India
archana71gupta@yahoo.co.in , drjpguptadental@yahoo.com

Abstract- Chikungunya is a worldwide prevalent viral disease, which spreads due to mosquito bite. At present, the terror of this disease is spreading in India like an epidemic. Usually it is not deadly but the joint pain caused by this can persist for months. The symptoms are fever, pain in joints and muscles, fatigue, vomiting, headache and red spots on skin. It can be prevented by keeping cleanliness and avoid getting bitten by mosquitoes.

Key words- Chikungunya, mosquito, virus, fever, pain.

1. प्रस्तावना– चिकनगुनिया एक वायरल रोग है जो *एडीज एजिप्टी* नामक मच्छर के काटने से होता है। एक बीमार व्यक्ति को एडीज मच्छर के काटने के बाद, स्वस्थ व्यक्ति को इसके द्वारा काटने से यह बीमारी फैलती है। इसमें शुरूआत में मरीज के जोड़ों में तेज दर्द, जुकाम, बुखार और खाँसी जैसे लक्षण देखने को मिलते हैं। यह डेंगू के मुकाबले कम खतरनाक है।

पहली बार चिकनगुनिया को सन् 1952 में दक्षिणी तंजानिया में रिपोर्ट किया गया था। अब तक यह बीमारी 60 से अधिक देशों में विस्तारित हो चुकी है। इसका नाम अफ्रीकन भाषा से लिया गया है, जिसका मतलब होता है ''जो झुका दे''। यह नाम इसलिए पड़ा क्योंकि जोड़ों में अधिक दर्द की वजह से मरीज झुककर चलने लगते हैं। यह दर्द कई महीने तक भी बना रह सकता है।[1]

2. **चिकनगुनिया के लक्षण**– मादा एडीज मच्छर के काटने के 2–5 दिन के बाद इसके लक्षण दिखाई देते हैं। एक बार इस बीमारी से ग्रसित होने पर, शरीर इसकी प्रतिरोधक क्षमता विकसित कर लेता है और दुबारा इसके होने की सम्भावना कम होती है। इसके लक्षण निम्नवत् हैं–

1. जोड़ों में दर्द और सूजन, 2. तेज बुखार, 3. शरीर पर लाल रंग के चकत्ते, 4. सिर दर्द, जुकाम, खाँसी, 5. आँखों में दर्द, 6. जी मिचलाना, उल्टी, 7. भूख न लगना।

3. **चिकनगुनिया एवं डेंगू में अन्तर**– चिकनगुनिया एवं डेंगू दोनों में तेज बुखार होता है लेकिन चिकनगुनिया में जोड़ों में तेज दर्द भी होता है। डेंगू में आँखों के पीछे दर्द होता है। चिकनगुनिया के लक्षण 4–6 महीनों तक बने रह सकते हैं जबकि डेंगू के लक्षण लगभग 15 दिनों में खत्म हो जाते हैं। चिकनगुनिया में प्लेटलेट्स की संख्या कम नहीं होती जबकि डेंगू में यह तेजी से कम होती है। चिकनगुनिया ज्यादातर मामलों में जानलेवा नहीं होता जबकि डेंगू जानलेवा हो सकता है।[2]

4. **चिकनगुनिया का परीक्षण**–

क. पूर्ण रक्त गणना(कम्प्लीट ब्लड काउंट–सी.बी.सी.)– खून में सफेद रक्त कण और प्लेटलेट्स की संख्या की कमी का आंकलन किया जाता है।

ख. रिवर्स ट्रांसक्रिप्टेस पॉलिमेरेज चेन रियेक्शन(आर.टी.–पी.सी.आर.)– इसमें डी.एन.ए. से सम्बन्धित जाँच करके पता लगाया जाता है कि व्यक्ति को चिकनगुनिया है या नहीं।

ग. वायरस आइसोलेशन टेस्ट– इसमें मरीज का खून लेकर उसमें वायरस प्रतिरोपड़ करके उसमें होने वाले परिवर्तन को देखा जाता है।

घ. इन्जाइम लिन्क्ड इम्यूनो सॉरबेन्ट एसेज(एलाईजा)– इसमें रक्त में चिकनगुनिया के एंटीबॉडीज का पता लगाया जाता है।[3]

5. **चिकनगुनिया से बचाव**–

1. घर व उसके आसपास पानी न एकत्र होने दें।
2. खिड़की व दरवाजों में जाली लगाकर रखें।
3. पूरे शरीर को ढंकने वाले कपड़े पहनें।
4. रात को सोते समय मच्छरदानी का प्रयोग करें।
5. पुराने टायरों व कूलरों में पानी जमा न होने दें।
6. घर में कीटनाशक का छिड़काव करें।
7. पानी भरे हुए बर्तनों को ढक कर रखें।
8. खुले में निकलने पर शरीर पर मच्छर–रोधी क्रम लगायें।[4]

6. **चिकनगुनिया का उपचार**–

1. इसकी कोई विशिष्ट दवा व वैक्सीन अभी तक उपलब्ध नहीं है। सिर्फ लक्षणिक चिकित्सा ही किया जा सकता है।
2. तरल पदार्थों का प्रचुर मात्रा में सेवन करना चाहिए।
3. जोड़ों के दर्द के लिए दर्दनाशक दवाएँ दी जाती हैं।
4. बुखार कम करने के लिए पैरासिटामॉल दवा का सेवन वांछनीय है।
5. पूर्ण विश्राम करना चाहिए।

7. **निष्कर्ष**– यदि बुखार 1–2 दिन में ठीक न हो तो डॉक्टर की सलाह जरूर लेनी चाहिए। अपने आसपास साफ–सफाई और मच्छरों से बचाव के तरीकों को अपनाकर इस संक्रामक रोग पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

संदर्भ

1. काग्लिओटी, सी0; लल्ले, ई0; कैसटीलेट्टी, सी0; कारलेटी, एफ0; कैपोबियानची, एम0 आर0 एवं बार्डी, एल0(2013) चिकनगुनिया वायरसः एक अवलोकन, द न्यू माइक्रोबायलोजिका, खण्ड–36, अंक–3, मु0पृ0 211–227।
2. पावर्स, ए0 एम0 एवं लोग्यू, सी0 एच0(2007) चेन्जिंग पैटर्न्स ऑफ चिकनगुनिया वायरसः री–इमर्जेन्स ऑफ ए जूनोटिक आर्बोवायरस, ज0 जन0 वायरोल0, खण्ड–88, अंक–9, मु0पृ0 2363–2377।
3. बर्ट फेलिसिटी जे0; रोल्फ, मिशेल एस0; रूली, नेस्टर ई0; महालिंगम, सुरेश एवं हेसी, मार्क टी0(2012) चिकनगुनियाः ए रि–इमर्जिंग वायरस, खण्ड–379, अंक–9816, मु0पृ0 662–671।
4. मॉरिसन, टी0 ई0(2014) रि–इमर्जेंस ऑफ चिकनगुनिया वायरस, जर्नल ऑफ वायरोलॉजी, खण्ड–88, अंक–20, मु0पृ0 11644–11647।